(Answer No 10)

(10) परिस्थितिकी तन्त्र या पारितन्त्र :- किसी सीमित क्षेत्र के जीवीय समुदाय, भौतिक पर्यावरण तथा उनके बीच क्रिया-प्रक्रिया जनित सम्बन्धों के समुच्चय को परितन्त्र कहते हैं।

तलाब में रहने वाले जीव-जन्तु अजीव वस्तुएं मिलकर एक परितन्त्र बनाते हैं। इसमें जल की मात्रा एवं जीवों की संख्या सीमित होती है।

यह एक सरल परितन्त्र है। समुन्द्र का जल एवं जीवों की संख्या असीमित होने के कारण एक ही जटिल परितन्त्र है इसी प्रकार वन, रेगिस्तान एवं टुण्ड्रा प्रदेश आदि जटिल परितन्त्र हैं।

पृथ्वी स्वयं में एक ही वृहद परितन्त्र है।

परितन्त्र के प्रकार :- परितन्त्र को मुख्य रूप से तीन भागों में बाटा जा सकता है।

(1) स्थलीय परितन्त्र :- स्थलीय परितन्त्र के अन्तर्गत स्थल पर पाये जाने वाले परितन्त्र आते हैं- जैसे - रेगिस्तान, मरूस्थल, घास का मैदान।

② जलीय परितन्त्र :- जलीय परितन्त्र को हम पुनः दो बाट सकते हैं।

(i) स्वच्छ जल परितन्त्र (ii) समुन्द्री परितन्त्र

③ आकाशीय परितन्त्र :- स्थलीय एवं जलीय परिवर्तन के अन्तर्गत आकाश में भी कई प्रकार के परितन्त्र हो सकते हैं।

इसमें पृथ्वी के अलावा अन्य ग्रह भी सम्मिलत हैं। ऐसे भी परितन्त्र आकाशीय परितन्त्र कहलाते हैं।